



Mrs Gaytri Soni

27 Jun 1967

12:00 PM

Balaghat

Model: Web-MyKundli

Order No: 119149601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: स्त्रीलिंग
जन्म तिथि _____: 27/06/1967
दिन _____: मंगलवार
जन्म समय _____: 12:00:00 घंटे
इष्ट _____: 16:19:34 घटी
स्थान _____: Balaghat
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 21:48:00 उत्तर
रेखांश _____: 80:16:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:08:56 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 11:51:04 घंटे
वेलान्तर _____: -00:02:46 घंटे
साम्पातिक काल _____: 06:09:49 घंटे
सूर्योदय _____: 05:28:10 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:55:21 घंटे
दिनमान _____: 13:27:11 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 11:31:53 मिथुन
लग्न के अंश _____: 08:52:34 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कन्या - बुध
राशि-स्वामी _____: कुम्भ - शनि
नक्षत्र-चरण _____: शतभिषा - 3
नक्षत्र स्वामी _____: राहु
योग _____: प्रीति
करण _____: गर
गण _____: राक्षस
योनि _____: अश्व
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मेष
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: सी-सीमा
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कर्क

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1889	आषाढ़	6
पंजाबी	संवत : 2024	आषाढ़	13
बंगाली	सन् : 1374	आषाढ़	12
तमिल	संवत : 2024	आनी	13
केरल	कोल्लम : 1142	मिथुनम	13
नेपाली	संवत : 2024	आषाढ़	13
चैत्रादि	संवत : 2024	आषाढ़	कृष्ण 5
कार्तिकादि	संवत : 2024	ज्येष्ठ	कृष्ण 5

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 5
तिथि समाप्ति काल _____ : 07:28:08
जन्म तिथि _____ : 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : शतभिषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 24:20:02 घंटे
जन्म योग _____ : शतभिषा
सूर्योदय कालीन योग _____ : प्रीति
योग समाप्ति काल _____ : 14:36:43 घंटे
जन्म योग _____ : प्रीति
सूर्योदय कालीन करण _____ : तैत्ति
करण समाप्ति काल _____ : 07:28:08 घंटे
जन्म करण _____ : गर
भयात _____ : 33:52:17
भभोग _____ : 64:42:21
भोग्य दशा काल _____ : राहु 8 वर्ष 6 मा 7 दि

घात चक्र

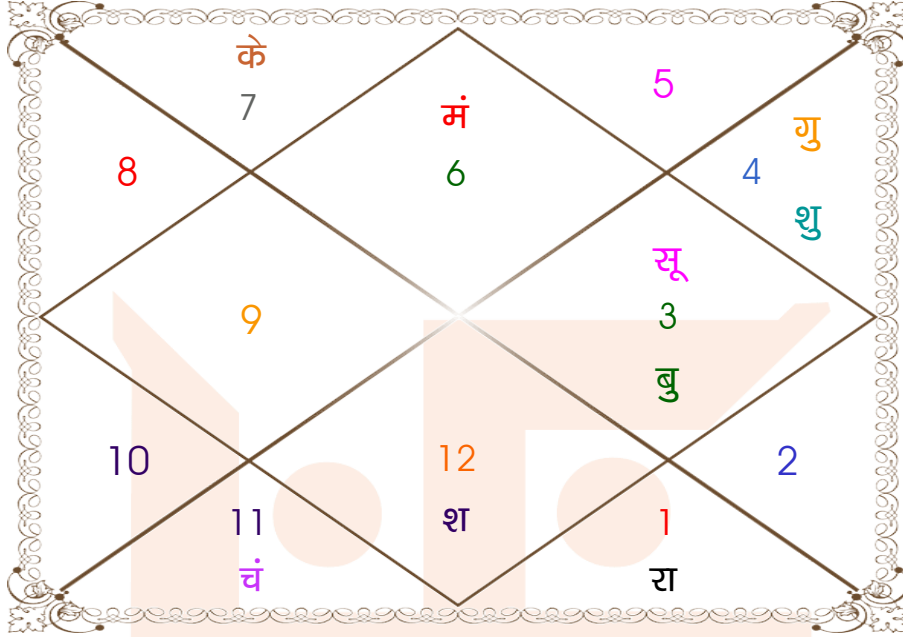
मास _____ : चैत्र
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : गुरुवार
नक्षत्र _____ : आर्द्रा
योग _____ : गण्ड
करण _____ : किंस्तुघ्न
प्रहर _____ : 3
वर्ग _____ : श्वान
लग्न _____ : मिथुन
सूर्य _____ : वृष
चन्द्र _____ : मिथुन
मंगल _____ : मिथुन
बुध _____ : वृष
गुरु _____ : कर्क
शुक्र _____ : सिंह
शनि _____ : मेष
राहु _____ : कन्या

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

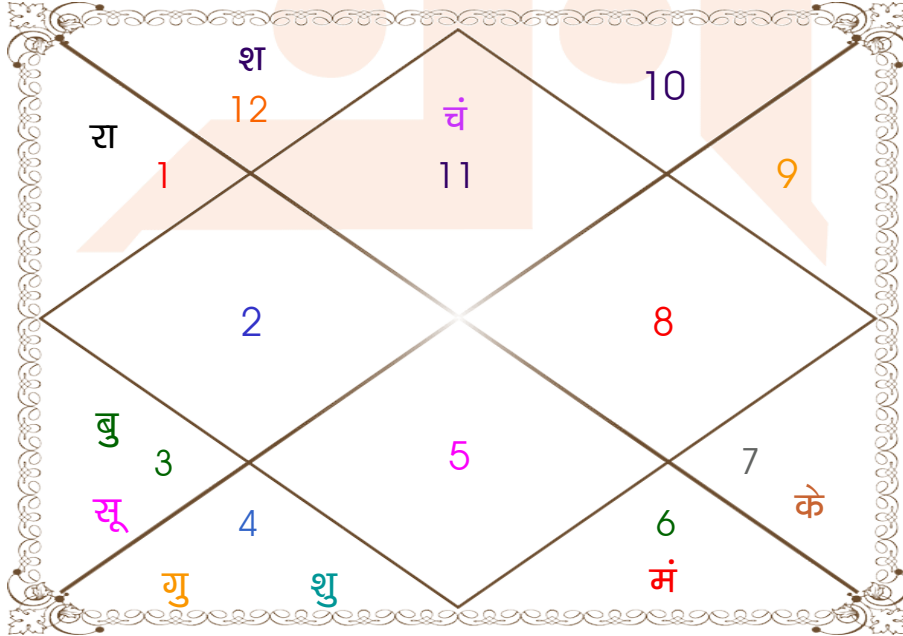
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

श	रा		सू बु
चं			शु गु
		के	मं ल

लग्न कुंडली

बु सू	रा	श
शु गु		चं
ल मं	के	

विंशोत्तरी
राहु 8वर्ष 6मा 7दि
राहु

27/06/1967

02/01/2078

राहु	03/01/1976
गुरु	03/01/1992
शनि	03/01/2011
बुध	03/01/2028
केतु	03/01/2035
शुक्र	03/01/2055
सूर्य	02/01/2061
चन्द्र	03/01/2071
मंगल	02/01/2078

योगिनी
धान्या 1वर्ष 5मा 1दि
सिद्धा

27/11/2019

27/11/2026

सिद्धा	08/04/2021
संकटा	28/10/2022
मंगला	07/01/2023
पिंगला	29/05/2023
धान्या	28/12/2023
भ्रामरी	07/10/2024
भद्रिका	27/09/2025
उल्का	27/11/2026

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

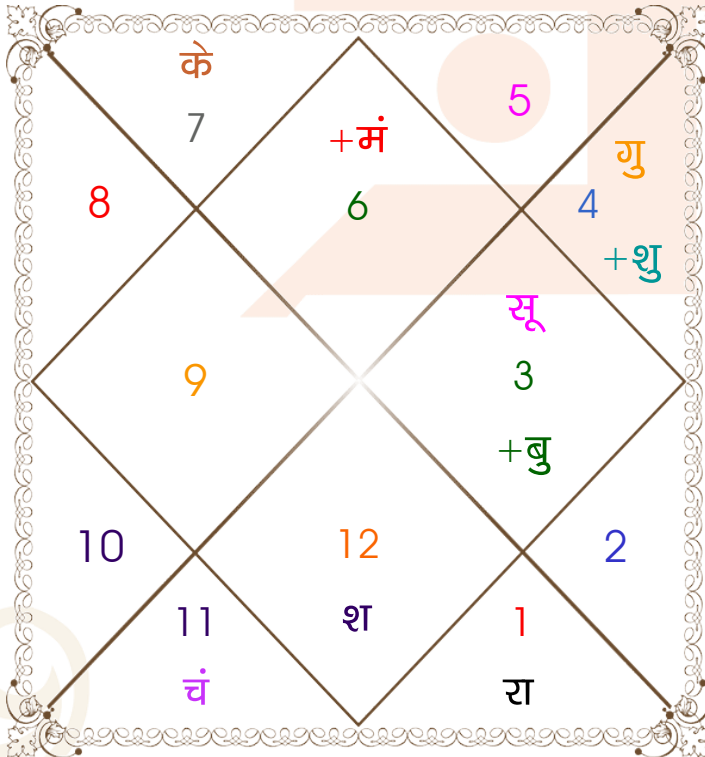
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न		कन्या	08:52:34	335:14:55	उ०फाल्गुनी	4	12	बुध	सूर्य	शुक्र	---
सूर्य		मिथु	11:31:53	00:57:13	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	शनि	सम राशि
चंद्र		कुंभ	13:41:20	12:21:12	शतभिषा	3	24	शनि	राहु	बुध	सम राशि
मंगल		कन्या	27:20:23	00:19:54	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	गुरु	शत्रु राशि
बुध	व	मिथु	28:32:44	00:04:29	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	शुक्र	स्वराशि
गुरु		कर्क	13:01:04	00:12:10	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	राहु	उच्च राशि
शुक्र		कर्क	26:45:55	00:54:15	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	गुरु	शत्रु राशि
शनि		मीन	18:24:27	00:02:46	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	सम राशि
राहु	व	मेष	11:31:30	00:04:41	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	बुध	शत्रु राशि
केतु	व	तुला	11:31:30	00:04:41	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	सम राशि
हर्ष		सिंह	27:15:30	00:01:32	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	सूर्य	---
नेप	व	तुला	28:32:06	00:01:05	विशाखा	3	16	शुक्र	गुरु	शुक्र	---
प्लूटो		सिंह	24:46:55	00:00:53	पू०फाल्गुनी	4	11	सूर्य	शुक्र	बुध	---
दशम भाव		मिथु	08:50:55	--	आर्द्रा	--	6	बुध	राहु	गुरु	--

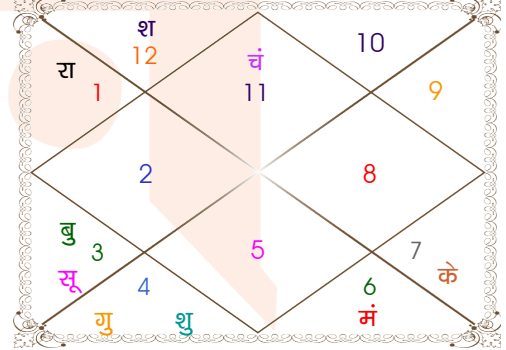
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:24:01

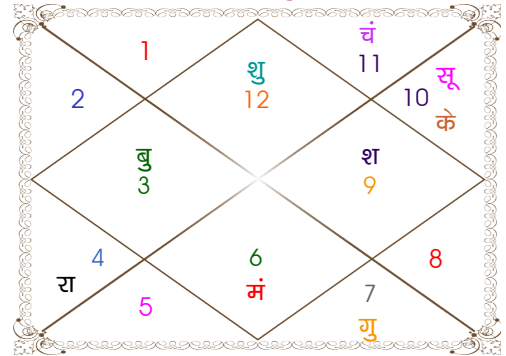
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	सिंह 23:52:18	कन्या 08:52:34
2	कन्या 23:52:18	तुला 08:52:01
3	तुला 23:51:45	वृश्चिक 08:51:28
4	वृश्चिक 23:51:11	धनु 08:50:55
5	धनु 23:51:11	मकर 08:51:28
6	मकर 23:51:45	कुम्भ 08:52:01
7	कुम्भ 23:52:18	मीन 08:52:34
8	मीन 23:52:18	मेष 08:52:01
9	मेष 23:51:45	वृष 08:51:28
10	वृष 23:51:11	मिथुन 08:50:55
11	मिथुन 23:51:11	कर्क 08:51:28
12	कर्क 23:51:45	सिंह 08:52:01

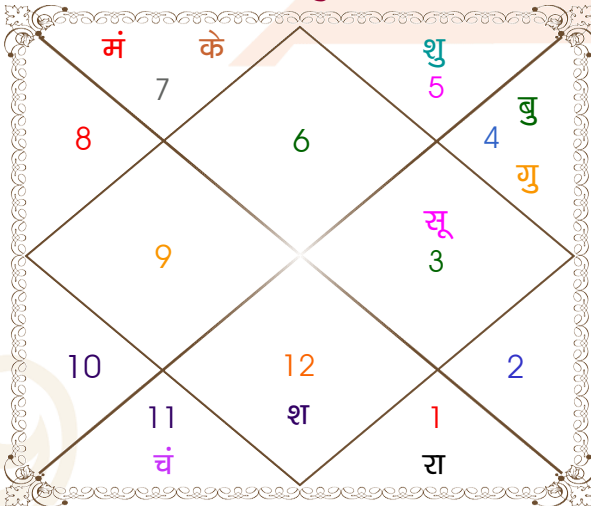
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या 08:52:34	
2	तुला 07:57:44	
3	वृश्चिक 08:17:31	
4	धनु 08:50:55	
5	मकर 09:28:45	
6	कुम्भ 09:53:56	
7	मीन 08:52:34	
8	मेष 07:57:44	
9	वृष 08:17:31	
10	मिथुन 08:50:55	
11	कर्क 09:28:45	
12	सिंह 09:53:56	

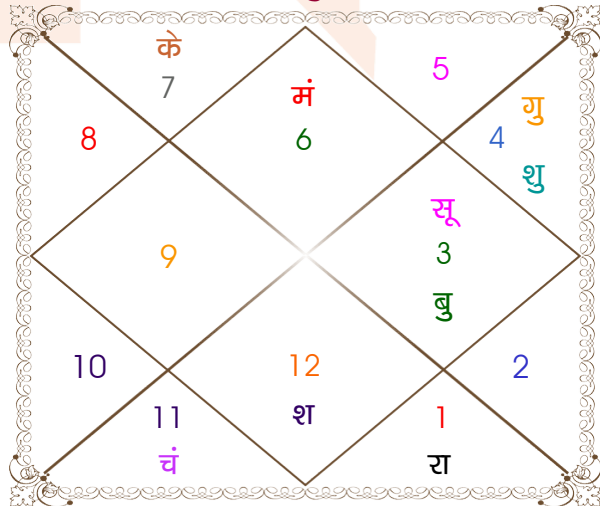
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा
आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा
स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : राहु 8 वर्ष 6 मास 7 दिन

राहु 18 वर्ष 27/06/1967 03/01/1976	गुरु 16 वर्ष 03/01/1976 03/01/1992	शनि 19 वर्ष 03/01/1992 03/01/2011	बुध 17 वर्ष 03/01/2011 03/01/2028	केतु 7 वर्ष 03/01/2028 03/01/2035
00/00/0000	गुरु 20/02/1978	शनि 06/01/1995	बुध 31/05/2013	केतु 31/05/2028
00/00/0000	शनि 02/09/1980	बुध 15/09/1997	केतु 29/05/2014	शुक्र 31/07/2029
27/06/1967	बुध 09/12/1982	केतु 25/10/1998	शुक्र 28/03/2017	सूर्य 06/12/2029
बुध 04/07/1968	केतु 15/11/1983	शुक्र 24/12/2001	सूर्य 02/02/2018	चंद्र 07/07/2030
केतु 22/07/1969	शुक्र 16/07/1986	सूर्य 06/12/2002	चंद्र 04/07/2019	मंगल 03/12/2030
शुक्र 22/07/1972	सूर्य 04/05/1987	चंद्र 07/07/2004	मंगल 01/07/2020	राहु 22/12/2031
सूर्य 16/06/1973	चंद्र 02/09/1988	मंगल 15/08/2005	राहु 18/01/2023	गुरु 27/11/2032
चंद्र 15/12/1974	मंगल 09/08/1989	राहु 21/06/2008	गुरु 25/04/2025	शनि 06/01/2034
मंगल 03/01/1976	राहु 03/01/1992	गुरु 03/01/2011	शनि 03/01/2028	बुध 03/01/2035
शुक्र 20 वर्ष 03/01/2035 03/01/2055	सूर्य 6 वर्ष 03/01/2055 02/01/2061	चंद्र 10 वर्ष 02/01/2061 03/01/2071	मंगल 7 वर्ष 03/01/2071 02/01/2078	राहु 18 वर्ष 02/01/2078 00/00/0000
शुक्र 04/05/2038	सूर्य 22/04/2055	चंद्र 03/11/2061	मंगल 01/06/2071	राहु 15/09/2080
सूर्य 04/05/2039	चंद्र 22/10/2055	मंगल 04/06/2062	राहु 18/06/2072	गुरु 08/02/2083
चंद्र 02/01/2041	मंगल 27/02/2056	राहु 04/12/2063	गुरु 25/05/2073	शनि 15/12/2085
मंगल 04/03/2042	राहु 20/01/2057	गुरु 04/04/2065	शनि 04/07/2074	बुध 27/06/2087
राहु 04/03/2045	गुरु 09/11/2057	शनि 03/11/2066	बुध 01/07/2075	00/00/0000
गुरु 03/11/2047	शनि 22/10/2058	बुध 03/04/2068	केतु 27/11/2075	00/00/0000
शनि 03/01/2051	बुध 28/08/2059	केतु 02/11/2068	शुक्र 27/01/2077	00/00/0000
बुध 03/11/2053	केतु 03/01/2060	शुक्र 04/07/2070	सूर्य 03/06/2077	00/00/0000
केतु 03/01/2055	शुक्र 02/01/2061	सूर्य 03/01/2071	चंद्र 02/01/2078	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल राहु 8 वर्ष 6 मा 28 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि 25/04/2025 03/01/2028	केतु - केतु 03/01/2028 31/05/2028	केतु - शुक्र 31/05/2028 31/07/2029	केतु - सूर्य 31/07/2029 06/12/2029	केतु - चंद्र 06/12/2029 07/07/2030
शनि 27/09/2025 बुध 14/02/2026 केतु 12/04/2026 शुक्र 23/09/2026 सूर्य 11/11/2026 चंद्र 01/02/2027 मंगल 30/03/2027 राहु 25/08/2027 गुरु 03/01/2028	केतु 12/01/2028 शुक्र 06/02/2028 सूर्य 13/02/2028 चंद्र 25/02/2028 मंगल 05/03/2028 राहु 27/03/2028 गुरु 16/04/2028 शनि 10/05/2028 बुध 31/05/2028	शुक्र 10/08/2028 सूर्य 31/08/2028 चंद्र 06/10/2028 मंगल 31/10/2028 राहु 03/01/2029 गुरु 01/03/2029 शनि 07/05/2029 बुध 06/07/2029 केतु 31/07/2029	सूर्य 07/08/2029 चंद्र 17/08/2029 मंगल 25/08/2029 राहु 13/09/2029 गुरु 30/09/2029 शनि 20/10/2029 बुध 07/11/2029 केतु 15/11/2029 शुक्र 06/12/2029	चंद्र 24/12/2029 मंगल 05/01/2030 राहु 06/02/2030 गुरु 07/03/2030 शनि 09/04/2030 बुध 10/05/2030 केतु 22/05/2030 शुक्र 26/06/2030 सूर्य 07/07/2030
केतु - मंगल 07/07/2030 03/12/2030	केतु - राहु 03/12/2030 22/12/2031	केतु - गुरु 22/12/2031 27/11/2032	केतु - शनि 27/11/2032 06/01/2034	केतु - बुध 06/01/2034 03/01/2035
मंगल 16/07/2030 राहु 07/08/2030 गुरु 27/08/2030 शनि 20/09/2030 बुध 11/10/2030 केतु 20/10/2030 शुक्र 13/11/2030 सूर्य 21/11/2030 चंद्र 03/12/2030	राहु 30/01/2031 गुरु 22/03/2031 शनि 22/05/2031 बुध 15/07/2031 केतु 06/08/2031 शुक्र 09/10/2031 सूर्य 28/10/2031 चंद्र 29/11/2031 मंगल 22/12/2031	गुरु 05/02/2032 शनि 30/03/2032 बुध 18/05/2032 केतु 06/06/2032 शुक्र 02/08/2032 सूर्य 19/08/2032 चंद्र 17/09/2032 मंगल 07/10/2032 राहु 27/11/2032	शनि 30/01/2033 बुध 28/03/2033 केतु 21/04/2033 शुक्र 27/06/2033 सूर्य 17/07/2033 चंद्र 20/08/2033 मंगल 13/09/2033 राहु 13/11/2033 गुरु 06/01/2034	बुध 26/02/2034 केतु 19/03/2034 शुक्र 18/05/2034 सूर्य 05/06/2034 चंद्र 06/07/2034 मंगल 27/07/2034 राहु 19/09/2034 गुरु 06/11/2034 शनि 03/01/2035
शुक्र - शुक्र 03/01/2035 04/05/2038	शुक्र - सूर्य 04/05/2038 04/05/2039	शुक्र - चंद्र 04/05/2039 02/01/2041	शुक्र - मंगल 02/01/2041 04/03/2042	शुक्र - राहु 04/03/2042 04/03/2045
शुक्र 25/07/2035 सूर्य 24/09/2035 चंद्र 03/01/2036 मंगल 14/03/2036 राहु 13/09/2036 गुरु 22/02/2037 शनि 03/09/2037 बुध 22/02/2038 केतु 04/05/2038	सूर्य 22/05/2038 चंद्र 22/06/2038 मंगल 13/07/2038 राहु 06/09/2038 गुरु 25/10/2038 शनि 22/12/2038 बुध 11/02/2039 केतु 05/03/2039 शुक्र 04/05/2039	चंद्र 24/06/2039 मंगल 30/07/2039 राहु 29/10/2039 गुरु 18/01/2040 शनि 24/04/2040 बुध 19/07/2040 केतु 23/08/2040 शुक्र 03/12/2040 सूर्य 02/01/2041	मंगल 27/01/2041 राहु 01/04/2041 गुरु 28/05/2041 शनि 03/08/2041 बुध 03/10/2041 केतु 27/10/2041 शुक्र 07/01/2042 सूर्य 28/01/2042 चंद्र 04/03/2042	राहु 16/08/2042 गुरु 09/01/2043 शनि 01/07/2043 बुध 04/12/2043 केतु 05/02/2044 शुक्र 06/08/2044 सूर्य 30/09/2044 चंद्र 30/12/2044 मंगल 04/03/2045

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	9
भाग्यांक	2
मित्र अंक	1, 3, 6, 9, 2
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	27,36,45,54,63
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृष, तुला
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

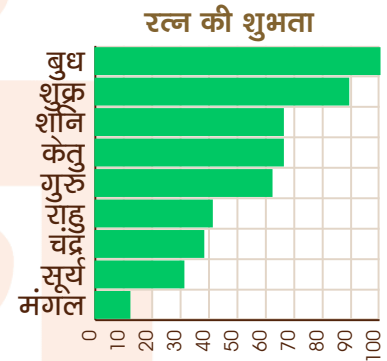
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	89%	धनार्जन, भाग्योदय, धन
नीलम	शनि	66%	दम्पति, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
लहसुनिया	केतु	66%	धन, धनार्जन
पुखराज	गुरु	62%	धनार्जन, सुख, दम्पति
गोमेद	राहु	41%	दुर्घटना, रोग
मोती	चंद्र	38%	शत्रु व रोग, हानि
माणिक्य	सूर्य	31%	व्यावसायिक हानि, व्यय
मूंगा	मंगल	12%	रोग, दुर्घटना, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
राहु	03/01/1976	6%	12%	0%	100%	62%	95%	72%	58%	53%
गुरु	03/01/1992	44%	50%	25%	98%	75%	77%	66%	41%	66%
शनि	03/01/2011	6%	12%	0%	100%	62%	95%	78%	52%	53%
बुध	03/01/2028	44%	12%	12%	100%	62%	95%	66%	41%	66%
केतु	03/01/2035	6%	12%	25%	100%	62%	95%	53%	16%	78%
शुक्र	03/01/2055	6%	12%	12%	100%	62%	100%	72%	52%	72%
सूर्य	02/01/2061	53%	50%	25%	100%	69%	77%	53%	16%	53%
चंद्र	03/01/2071	44%	56%	12%	100%	62%	89%	66%	16%	53%
मंगल	02/01/2078	44%	50%	38%	98%	69%	89%	66%	16%	72%

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/06/1967-17/06/1968 17/06/1968-07/03/1969	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/04/1971-10/06/1973	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/1979-15/03/1980 27/07/1980-06/10/1982	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	21/03/1990-20/06/1990 15/12/1990-05/03/1993 15/10/1993-10/11/1993	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया

फल

शुभ
शुभ
सम
शुभ
शुभ

क्षेत्र

दम्पति
भाग्योदय
स्वास्थ्य
सन्तति सुख
शत्रु व रोग मुक्ति

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगी तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगी। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपके पति का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगी। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगी। इसके प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी परन्तु इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक युवक से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु जैसे अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगी तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगी। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी।



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं । यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं । त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है । अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है ।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

मिथुन राशि में रवि हो तो जातक धनवान्, ज्योतिषी, इतिहास प्रेमी उदार, विवेकी, विद्वान्, बुद्धिमान, मधुरभाषी, नम्र एवं प्रेमी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी। उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी पूर्ण रहेगी। धनैश्वर्य से वे सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में आपको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही आपके आजीविका या व्यापार संबंधी कार्य भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहायता से सम्पन्न होंगे एवं आप इन कार्यों में वांछित सफलता अर्जित कर सकेंगी।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध प्रायः मधुर ही रहेंगे तथापि यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। जीवन में आप पिता को अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक सहायता प्रदान करेंगी एवं सुख दुःख में सर्वदा उनका सहयोग करेंगी।

चन्द्र

षष्ठभाव में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पायु, आसक्त, कफरोगी, खर्चीले स्वभाववाला, नेत्ररोगी एवं भृत्यप्रिय होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत्त, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक व्याकुलता से वे पीड़ित रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी। आपके संबंध प्रायः मधुर ही होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प समय के लिए संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। आप एक दूसरे से प्रायः सहमत रहेंगे एवं विश्वास भी करेंगे। इसके साथ ही आप भी हमेशा सुख दुःख में यथाशक्ति उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान्, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

मिथुन राशि में बुध हो तो जातक मधुरभाषी, शास्त्रज्ञ, लब्धप्रतिष्ठ, वक्ता, लेखक, अल्पसन्ततिवाला, विवेकी, सदाचारी, खोज के काम में चतुर, दीर्घायु, यात्रा का शौकीन, संगीत में रुचि एवं हास परिहास करने वाला होता है।

गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराकमी, सद्बुद्धि, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

कर्क राशि में शुक्र हो तो जातक धार्मिक, ज्ञाता, सुन्दर, सुख और धन का इच्छुक, नीतिज्ञ, आवेशपूर्ण, डरपोक, दुःखी एवं प्रचुर सन्तान होता है।

शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

अष्टम भाव में राहु हो तो जातक क्रोधी, व्यर्थभाषी, मूर्ख, उदररोगी, कामी, पुष्टदेही एवं गुप्तरोगी होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

द्वितीय भाव में केतु हो तो जातक अस्वस्था, कटुवचन बोलने वाला, मुंह के रोग, राजभीरु एवं विद्रोही होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

दशा विश्लेषण

**महादशा :- बुध
(03/01/2011 - 03/01/2028)**

बुध की महादशा 03/01/2011 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 03/01/2028 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध दशम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के कारण सन्तान से सुख और शत्रु पर विजय मिली होगी तथा कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल रही होगी। बुध की इस दशा में आप को यश तथा ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति होगी, सम्मान और उत्तम शिक्षा मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें भरपूर शक्ति, उत्साह तथा क्रियाशीलता रहेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण हल्का ज्वर, विषाणु जन्य संक्रामक बीमारी, त्वचा रोग तथा स्नायविक दुर्बलता हो सकती है। अधिक मानसिक तथा शारीरिक श्रम से बचे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से आय में वृद्धि होगी। जमीन-जायदाद से भी आय में वृद्धि होगी। आपको माता-पिता से लाभ मिल सकता है। सट्टे में लेन-देन लाभदायक होगा। जीविकोपार्जन के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर तथा हाथ से बने सामानों का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सम्मान मिलेगा, आय में वृद्धि होगी तथा वरिष्ठ कर्मचारियों और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और अधीनस्थ कर्मचारियों तथा सहकर्मियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार तथा व्यवसायियों के कार्य-क्षेत्र में वृद्धि होगी। आर्थिक तथा व्यावसायिक समृद्धि के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित लेन-देन लाभदायक होगा। चल-अचल सम्पत्ति से लाभ मिलेगा। वाहन सुख भी मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा तथा सूर्य की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी। कार्य के सिलसिले में यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आपकी शैक्षिक उपलब्धि आपकी जीविका की संभावना में वृद्धि करेगी। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा व्यापार के विषय में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

है। आपका दिमाग विवेक पूर्ण व विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपके जीवन साथी की अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और सुख की प्राप्ति होगी। आपका जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता की विदेश यात्रा, साझेदारों से लाभ तथा आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपके पिता का धन-संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में शुभ परिवर्तन और अचानक लाभ मिलेगा जबकि बड़ों का शुभ उद्देश्य के लिए व्यय होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अति उत्तम रहेगा। इस दशा के दौरान आपको यश, सम्मान तथा सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको व्यवसाय में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि सूर्य को अन्तर्दशा में व्यय तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और कुछ बाधाएं हो सकती हैं। राहु की अन्तर्दशा में कुछ बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप बच्चों से सुख मिलेगा।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

**अंतर्दशा :- बुध - गुरु
(18/01/2023 - 25/04/2025)**

आपके लिए बुध की महादशा 03/01/2011 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 18/01/2023 को प्रारंभ होकर 25/04/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। किस्मत साथ देगी। बड़े-भाई-बहनों से संबंध मधुर रहेंगे। चाचा से भी उत्तम संबंध होंगे। आर्थिक प्रगति के अवसर मिलेंगे। बहुत से प्रभावशाली मित्र होंगे जिनसे मदद मिलेगी। विवाह हो सकता है। विवाहित जीवन सुखी रहेगा। उच्चपद प्राप्त हो सकता है। लेखन, प्रकाशन और विक्रय से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली रहेंगे। आपके पिता को संचार माध्यम से लाभ होगा। माता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है; अचानक धनलाभ हो सकता है। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य, सुख-साधन, शिक्षा में सफलता, यात्रा, तीर्थयात्रा, प्रगति, उत्तम स्वास्थ्य और उत्तम विवाहित जीवन का संकेत है।

आपकी संतान को सामूहिक कार्यों से लाभ होगा, परीक्षा में सफलता मिलेगी, सम्मानित होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो सुख-साधन उपलब्ध होंगे, साझेदारी से लाभ होगा, यात्राएं होंगी, व्यापार में लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में वातावरण मधुर रहेगा। परामर्शदाताओं और व्यापारियों की आय में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कान की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- बुध - शनि
(25/04/2025 - 03/01/2028)**

आपके लिए बुध की महादशा 03/01/2011 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा शनि की होगी जो आपके लिए 25/04/2025 को प्रारंभ होकर 03/01/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु और धैर्य का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। महत्वाकांक्षाएं तीव्र होंगी। व्यापार में आय अच्छी होगी। नया व्यापार प्रारंभ कर सकते हैं। विदेश यात्रा संभव है। विवाह या साझेदारी के कारण जिम्मेदारियां बढ़ सकती हैं। संघर्ष के बाद प्रोन्नति हो सकती है। ज्ञानार्जन, धनलाभ और उच्चपद की संभावना है। सम्मान में वृद्धि होगी। कार्यों में सफलता मिलेगी; समृद्ध बनेंगे। दर्शनशास्त्र और अध्यात्म में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता की प्रोन्नति होगी।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

महादशा :- केतु
(03/01/2028 - 03/01/2035)

केतु की महादशा 03/01/2028 को आरम्भ और 03/01/2035 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में केतु द्वितीय भाव में स्थित है। केतु की अष्टम भाव पर दृष्टि है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको लाभ, अच्छी शिक्षा, पारिवारिक सुख और सहे के कार्यों में लाभ हुआ होगा। केतु की इस दशा में आपको सुख तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप आपको संक्रामक बीमारी, विषाणु जाति बुखार, गले में संक्रमण, फोड़ा-फुन्सी, साँस सम्बन्धी बीमारियाँ आदि हो सकती हैं। थोड़ी सतर्कता से इनसे बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपको विरासती सम्पत्ति अथवा अप्रत्याशित स्रोतों से धन की प्राप्ति हो सकती है। सहे से लाभ की सम्भावना भी है व्यवसाय-व्यापार में भी धनोपार्जन अच्छा होगा। जीविका के लिये कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर, लेखन, गणित, विदेशी भाषा, दवा, वायु सेना, लेख-कार्य आदि का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़े, रत्न, चमड़े के सामान, कम्प्यूटर, लेखन-सामग्री, किताब, समाचार पत्र, घड़ी आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, पदोन्नति तथा आय में वृद्धि होगी। आपको अधीनस्थ कर्मचारियों तथा सहायकों का सहयोग और वरिष्ठ कर्मचारियों की सदेच्छा मिलेगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को अच्छा लाभ मिलेगा और उनकी आय अच्छी होगी। आपको लक्ष्य की प्राप्ति होगी तथा व्यापार का विस्तार और व्यावसायिक गतिविधियों में वृद्धि होगी।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का सारा सुख मिलेगा। आपकी जमीन-जायदाद तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी। सभी लेन-देन लाभदायक होंगे। आपको सुन्दर

वाहन का सुख मिलेगा। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्राएं होंगी। मामूली नुकसान के प्रति सावधानी बरतें। मंगल की अन्तर्दशा में लम्बी यात्राओं की सम्भावना है जो लाभदायक होंगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप तेज और क्रियाशील हैं और सभी प्रतियोगिताओं तथा परीक्षाओं में अच्छा करेंगे। तकनीकी विषयों, कम्प्यूटर-प्रौद्योगिकी, लेखा-कार्य, भोजन प्रौद्योगिकी लेखन, गणित और बैंकिंग में आपकी रुचि होगी। आप बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे सफल और समृद्धिशाली होंगे और आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी के जीवन में कुछ परिवर्तन, अचानक लाभ और आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। परिवार में अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने के लिये आपको कौशल तथा धैर्य से काम लेना होगा। आपकी माता को सभी प्रकार का लाभ, वाहन सुख और मनोकामनाओं की पूर्ति होगी जबकि आपके पिता को विरोधियों पर विजय मिलेगी और कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या होगी। आपके छोटे भाई-बहनों का कुछ व्यय होगा, उनकी यात्रा और उनके जीवन में कुछ परिवर्तन होगा जबकि बड़े भाई-बहनों को सट्टे में लाभ, तकनीकी शिक्षा और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सभी सुख और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। शुक्र की अन्तर्दशा में आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा और सम्पत्ति, सुख और सफलता की प्राप्ति होगी। सूर्य की अन्तर्दशा में वाहन और मकान की प्राप्ति होगी और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी जबकि चंद्र की अन्तर्दशा के दौरान लोकप्रियता और भाई-बहनों से लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यय होगा जबकि राहु कुछ समस्या खड़ी कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा में कुछ स्वास्थ्य समस्या और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा के दौरान जीवन-वृत्ति में सफलता और समृद्धि मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा में अच्छी शिक्षा, सट्टे की गतिविधियों में सफलता और सुख मिलेगा।

अंतर्दशा :- केतु - केतु
(03/01/2028 - 31/05/2028)

आपके लिए केतु महादशा 03/01/2028 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 03/01/2028 को प्रारंभ होकर 31/05/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न रहेंगे। रिश्तेदारों के साथ कुछ मतभेद हो सकते हैं मगर वे शांतिपूर्वक सुलझ जाएंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, इच्छाएं पूर्ण होंगी, महत्वपूर्ण व्यक्तियों से संपर्क होगा जो लाभकारी रहेगा। अचानक धनलाभ हो सकता है। साझेदार से लाभ होगा, विरासत में धन आ सकता है। तंत्र-मंत्र में सफलता मिल सकती है। विदेश यात्रा संभव है।

आपके जीवनसाथी को विरासत में धन मिल सकता है। आपके पिता लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे। माता का धनार्जन उत्तम होगा, सफल होंगी, सुख-साधन उपलब्ध होंगे। आपके भाई-बहनों के लिए खर्च, उत्तम शिक्षा का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यक्षेत्र में सफल होंगे, लोकप्रिय बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारियों से उत्तम संबंध रहेंगे, भाग्यशाली होंगे। परामर्शदाताओं को निवेश से लाभ होगा, धनी बनेंगे। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है; अचानक धनागम हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मुख और दांतों की व्याधियों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए भूरा कुत्ता पालें।

अंतर्दशा :- केतु - शुक्र
(31/05/2028 - 31/07/2029)

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी।

इस अवधि में आपकी आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। किस्मत साथ देगी, लोकप्रियता बढ़ेगी। धनागम अच्छा होगा। धन संचित होगा, अचल संपत्ति और वाहन क्रय कर सकते हैं। सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके बहुत से ज्ञानवान और प्रभावशाली मित्र होंगे जो लाभकारी रहेंगे। कला में रुचि होगी। आप प्रसन्नचित्त रहेंगे। कार्यक्षेत्र में उच्चपद प्राप्त होगा, सम्मान मिलेगा।

आपके जीवनसाथी सौभाग्यशाली होंगे। आपके पिता को स्वयं के प्रयास से सफलता मिलेगी; वे धनी बनेंगे, लघु यात्राएं होंगी। माता विरासत द्वारा अचल संपत्ति की मालिक बन सकती हैं; धनी बनेंगी। आपके छोटे भाई-बहनों के लिए यात्रा, पिता से लाभकारी

संबंध, धन-समृद्धि और प्रसन्नता का योग है। बड़े भाई-बहन उच्चपद प्राप्त करेंगे, प्रसिद्ध और धनी बनेंगे।

आपकी संतान सफल रहेगी, उत्तम मित्र होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार से लाभ होगा, किस्मत साथ देगी, धनार्जन अच्छा होगा। अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाताओं को विविध माध्यमों से लाभ होगा। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

ॐ शुं शुक्राय नमः

अंतर्दशा :- केतु - सूर्य (31/07/2029 - 06/12/2029)

आपके लिए केतु महादशा 03/01/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 31/07/2029 को प्रारंभ होकर 06/12/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्ध होंगे। स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। तीर्थयात्रा कर सकते हैं; अध्यात्म में रुचि होगी। नेकी के कार्य करेंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, वाहन सुख रहेगा, शिक्षा उत्तम होगी, बहुत से मित्र होंगे। विरासत में जायदाद मिल सकती है। घरेलू सुख रहेगा; माता से उत्तम संबंध रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता धनी बनेंगे, इच्छाएं पूर्ण होंगी। माता को साझेदार के माध्यम से लाभ होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए अचानक लाभ, खर्चे, यात्रा और शत्रुओं पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान के सम्मान में वृद्धि होगी, उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, उच्चपद प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो साख में वृद्धि होगी। परामर्शदाता सफल रहेंगे। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंतर्दशा :- केतु - चन्द्र (06/12/2029 - 07/07/2030)

आपके लिए केतु महादशा 03/01/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 06/12/2029 से प्रारंभ होकर 07/07/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836, 9425878602
astrosandeep90@gmail.com

इस अवधि में आपके अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से उत्तम संबंध रहेंगे। स्पर्धा में कमी आएगी। आप नेकी के बहुत से कार्य करेंगे। खर्च बढ़ सकते हैं। यात्राएं हो सकती हैं, वातावरण में कुछ परिवर्तन हो सकता है। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। सफलता में बाधा आ सकती है।

आपके जीवनसाथी के कार्यक्षेत्र में रुकावटें आ सकती हैं। आपके पिता सफल और लोकप्रिय होंगे; उनके खर्च बढ़ सकते हैं। माता की लघु यात्राएं होंगी, वे सफल होंगी, उनकी कला में रुचि हो सकती है।

आपके भाई-बहनों के लिए सुखी जीवन, माता से उत्तम संबंध, परिवर्तन, अप्रत्याशित लाभ और उत्तम स्वास्थ्य का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, वे परीक्षा में सफल रहेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे; पारिवारिक जीवन उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धनी बनेंगे। धनार्जन उत्तम होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों की यात्राएं हो सकती हैं, खर्च बढ़ेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। अरिष्ट से बचाव के लिए दूध और चावल का दान करें।